ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 200-204
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

धूमिल की कविताओं में व्यंग्य चित्रण

डॉ0 रोहिनी पण्डित

असि0 प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष– हिन्दी विभाग, सौराष्ट्र कालेज, मदुरई (तमिलनाडु) भारत

Received-21.06.2022, Revised-26.06.2022, Accepted-29.06.2022 E-mail: rohini_hindi@yahoo.com

सारांशः – *व्यंग्य की उत्पत्ति अज्ज धातु में 'वि' उपसर्ग व 'ण्यत' प्रत्यय लगाने से हुई है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है, ताना कसना दूसरे शब्दों में, व्यंग्य एक ऐसी साहित्यिक अभिव्यक्ति अथवा रचना है, जिसके द्वारा व्यक्ति अथवा समाज की विसंगतियों और विडबनाओं अथवा उसके किसी पहलू को रोचक तथा हास्यास्पद ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। वर्तमान समाज में व्याप्त अव्यवस्थाओं को देखकर कभी–कभी मन व्यथित हो जाता है, चाहे वह अव्यवस्था सामाजिक, राजनितिक, आर्थिक या धार्मिक हो मन इन अव्यवस्थाओं का प्रतिकार करना चाहता है परन्तु किन्हीं व्यक्तिगत कारणों से हम इनका प्रतिकार नहीं कर पाते और ये भावनाएँ मन के किन्ही कोने में संचित होने लगती है। व्यंग्यकार इन्हीं संचित भावनाओं को व्यंग्य के माध्यम से समाज में लाने का प्रयास करता है।*

एन्सायक्लोपीडिया ऑफ ब्रिटानिका के अनुसार, "व्यंग्य अपने साहित्यिक रूप में, हास्यास्पद स्थितियों से उत्पन्न विनोद और अरूचि को सही–सही अभिव्यक्ति देने वाला साहित्य रूप है, बशर्ते कि उसमें हास्य स्पष्ट रूप से हो और वह कथन साहित्यकता से परिपूर्ण हो।" [1]

कुंजीभूत शब्द– साहित्यिक अभिव्यक्ति, विसंगतियों, विडबनाओं, हास्यास्पद, वर्तमान समाज, सामाजिक, राजनितिक, आर्थिक।

हिन्दी शब्दकोश की तरह ही ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शरी में भी व्यंग्य की परिभाषा दी गयी है उनके अनुसार, "व्यंग्य वह रचना है, जिसमें प्रचलित दोषों अथवा मूर्खताओं का कभी–कभी कुछ अतिरंजना के साथ मजाक उड़ाया जाता है।" ए. निकोल ने व्यंग्य में हास्य की अनिवार्यता पर प्रश्नचिन्ह लगाते हुए कहा है कि, व्यंग्य इस सीमा तक कटु हो सकता है कि वह किंचित भी हास्यजनक न हो। व्यंग्य बहुत तीखा वार करता है। उसमें कोई नैतिक बोध नहीं होता। उसमें दया, विनम्रता और उदारता का भी लेश नहीं होता। वह पूरी निर्देयता से प्रहार करता है। वह युग की समूची परिस्थितियों की धज्जियाँ किसी को भी क्षमा किए बगैर उड़ाता है।"[2]

हिन्दी साहित्य में व्यंग्य सदियों पूर्व से विद्यमान रहा है कबीर के पूर्व भी हिन्दी कविता में व्यंग्य वक्रोक्ति के रूप में विद्यमान था। व्यंग्य को हथियार बनाकर सामाजिक विसंगतियों और पाखंड को बेनकाब करने का कार्य कबीर ने किया था। तब से लेकर आज तक व्यंग्य कविता के अतिरिक्त गद्य की अनेक विधाओं में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करा चुका है। आज के परिवेश में व्यंग्य साहित्यिक विधाओं के केन्द्र में है।

आधुनिक युग में भारतेंदु ने व्यंग्य को अंग्रेजों के खिलाफ प्रयुक्त किया। परसाई जी. शरद जोशी, ठाकुर प्रसाद सिंह, बेढव बनारसी, श्री नारायण चतुर्वेदी, केशवचन्द्र वर्मा, लक्ष्मीकांत वर्मा, भीमसेन त्यागी, रवीन्द्रनाथ त्यागी, नरेन्द्र कोहली, सूर्यबाला और ज्ञान चतुर्वेदी ऐसे सफल व्यंग्यकार हैं। जिन्होंने समाज के प्रत्येक अंग प्रत्येक वर्ग का बड़ी बारीकी से अध्ययन करते हुए एक कुशल सेनानायक की तरह समाज की कमजोरियों पर, उसमें व्याप्त बुराइयों पर बड़ा ही सबल प्रहार अपने व्यंग्यों के माध्यम से किया।

धूमिल की सारी रचना प्रक्रिया और उनकी विचार–प्रक्रिया उस समाज के कटु यथार्थ के समानान्तर चलती है। जिस समाज में अवसरवादी राजनीति है, अन्याय है प्रजातंत्र अपनी परिभाषा खो चुका है, भ्रष्टाचार रक्तबीज बन गया हो, ऐसे कठिन समय में धूमिल ने अपने व्यंग्य में एक ऐसा शिल्प विकसित किया जिसमें कहने की सादगी, संवेदना की तीव्रता और भोगे हुए यथार्थ की तस्वीरें साफ उभरकर आती हैं।धूमिल की कविता में समकालीन युगबोध की सच्ची, मार्मिक और तीखी अभिव्यक्ति हुई है। 'संसद से सड़क तक उनका प्रथम काव्य–संग्रह है, जो 1972 में प्रकाशित हुआ। उनका दूसरा काव्य–संग्रह 'कल सुनना मुझे मरणोपरांत सन् 1977 में प्रकाशित हुआ है। उनका तीसरा काव्य –संग्रह 'सुदामा पांडे का जनतंत्र भी मरणोपरांत प्रकाशित हुआ।

आजादी के पहले भारतीय जनता को जो सुनहरे स्वप्न दिखाये गये थे, वे कुछ ही वर्षों में टूटकर बिखरने लगे। कुछ अवसरवादी नेताओं की स्वार्थवृत्ति, मुखौटेबाजी, नारेबाजी, भ्रष्टाचार ने धूमिल के दिलो–दिमाग को झकझोर दिया।

मैं सोचता रहा और
घूमता रहा टूटे ढाल के नीचे
वीरान सड़कों पर

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

आँखों के अंधे रेगिस्तानों में
फटे हुये पालों की अधूरी जल यात्राओं में
टूटी हुई चीजों के ढेर में
मैं खोयी हुई आजादी का अर्थ
ढूंढता रहा । [3]

व्यभिचारी, नेता हो या तथाकथित साहित्यिक हो– सभी को धूमिल का व्यंग्य प्रहार सहना पड़ता है। मोचीराम कविता का केन्द्रविन्दु व्यंग्य–बोध है। इस दृष्टि से इसे सर्वोत्कृष्ट रचना माना जा सकता है। मोचीराम कवि की व्यंग्याभिव्यक्ति का सार्थक माध्यम है।

कोई छोटा न कोई बड़ा है
मेरे लिए हर आदमी एक जोड़ी जूता है
जो मेरे सामने मरम्मत के लिए खड़ा है।
आजकल
कोई आदमी जूते की नाप से बाहर
नहीं है।[4]

हर रोज तरह–तरह के लोग मोचीराम के पास जूता मरम्मत कराने के लिए आते हैं, उसके अपने वर्ग (छोटी जाति) के लोग भी आने वालों में है। अधिकांश लोगों का उसके प्रति व्यवहार ठीक नहीं होता–कुछ पैसे देने में झगड़ते हैं। जूते के माध्यम से भिन्न–भिन्न जाति एवं संस्कारों के लोगों का पर्दाफाश करते हुए धूमिल कहीं –कहीं तीक्ष्ण व्यंग्यप्रहार भी किया है। "यहाँ तरह–तरह के जूते आते हैं। आदमी की अलग नवेयत

मोतीराम जूतों को भली–भांति पहचानता है।
बतलाते हैं
सबकी अपनी–अपनी शक्ल है
अपनी–अपनी थैली है
मसलन का जूता है
जूता क्या है चकत्तियों की थैली है इसे एक चेहरा पहचानता है.....
बाबू जी इस पर पैसा क्यों फूंकते हो?... कैसे आदमी हो। अपनी जाति पर थूकते हैं।"[5]

समाज में व्याप्त इन सामाजिक, राजनितिक, आर्थिक या धार्मिक विसंगतियों से समाज को मुक्त करना अंसभव है किन्तु इन्हें कुछ हद तक कमजोर अथवा कम किया जा सकता है। व्यंग्य के प्रहार द्वारा व्यंग्यकार विचारों का मंथन कर समाज की विषमताओं को व्यंग्य रचना द्वारा समाज के सम्मुख रखता है।

धूमिल ने अपने व्यंग्य रचना द्वारा भ्रष्टाचार, साम्प्रदायिकता, अशिक्षा पर व्यंग्य कर नैतिक मूल्यों को पुनः स्थापित करने का प्रयास किया है। धूमिल ने शिक्षा, राजनीति या धार्मिक सभी क्षेत्र में व्याप्त अनावश्यक विसंगति को समाज के समक्ष लाने का प्रयास किया है। नैतिक मूल्यों की रक्षा के लिए कवि अनैतिक पक्षों को समाज व पाठकों के समक्ष रखता है। विवशता का बोलबाला है। इसलिए मोचीराम सरीखे लोग सब कुछ जानते हुए अन्याय को चुपचाप सहते हैं

"वे हर अन्याय को चुपचाप सहते हैं
और पेट की आग से डरते हैं। जबकि मैं जानता हूँ कि, 'इनकार से
भरी हुई एक चीख
और एक समझदार चुप।
दोनों का मतलब एक है भविष्य गढ़ने में, 'चुप' और 'चीख'
अपनी–अपनी जगह एक ही किस्म से [6]

स्वार्थ और सत्तालोलुप नेता वर्ग जनता को अपनी रैयत न मानकर उसे सिर्फ बोट के रूप में देखता है। धूमिल नेताओं के इस पाखंड को बेनकाब कर दिया है

" हां यह सही है कि इन दिनों
मंत्री जब प्रजा के सामने आता है
तो पहले से

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

कुछ ज्यादा मुस्कुराता है
नये नये वादे करता है
और यह सब सिर्फ घास के
सामने होने की मजबूरी है।"[7]

गहन चिंतन ही व्यंग्य को जन्म देता है। किसी विषय की गंभीरता साहित्यकार को व्यंग्य लिखने के उद्देश्य को पूरा करने में सहायक होता है, वहीं उसका चिंतन उसको उसके लक्ष्य तक पहुंचाता है। जहाँ से वह चारों तरफ विसंगति ही विसंगति से घिरा हुआ पाता है। गंभीर व गहन चिंतन द्वारा व्यंग्यकार श्रेष्ठ व्यंग्य की रचना करता है, जो समाज में परिवर्तन का नेतृत्व करने में सहायक होता है। धूमिल का व्यंग्य पैना और तीक्ष्ण होता है दिखने में भले ही सहज हो। उनका व्यंग्य जनतंत्र, संविधान, समाजवाद पर प्रकट हुआ है।

मगर मैं जानता हूँ कि देश का समाजवाद
मालगोदाम में लटकती हुई उन बाल्टियों की तरह है जिस पर आग लिखा है
और उनमें बालू और पानी भरा है[8]

शहर में सूर्यास्त कविता में कवि का व्यंग्य मुखर अधिक हुआ है। जनतंत्र में कवि की आस्था नहीं है, क्योंकि उसकी बाराहोती है।

दरअसल जनतंत्र अपने यहाँ
ऐसा तमाशा है
जिसकी जान
मदारी की भाषा है। हर तरफ पुओं है।
हर तरफ कुहासा है
यहाँ सिर्फ वही आदमी, देश के करीब है
यो मुर्ख है या फिर गरीब है।[9]

शुकदेव सिंह का है धूमिल अपने समय का ही नहीं, हिन्दी का सबसे महत्वपूर्ण जनक और जनवादी कवि हैं। यह कथन इस बात की पुष्टि करता है कि धूमिल ने जिस जीवन की अभिव्यक्त अपने काव्य में की, उस जीवन को उन्होंने किसी अन्य को जीते नहीं देखा था, बल्कि स्वयं भोगा था और जिस आदमी की पीड़ा को वह अपनी कविता में वाणी देते रहे वह कोई और नहीं स्वयं धूमिल ही थे।

काव्य नायक शब्दों में और हवा में एक चमकदार गोल शब्द
फेंक दिया है– जनतंत्र
जिसकी रोज सैकड़ों बार हत्या होती है।
और हर बार
वह भेड़ियों की जुवान पर जिन्दा है[10]

नक्सलवादी तथा पटकथा कविताओं में धूमिल का व्यंग्य–बोध राजनीति से सम्बन्धित अधिक है। नक्सल आंदोलन के दौर में नक्सल को व्याख्यापित करते हुए वे कहते हैं

भूख से रिरियाती हुई फैली हवेली का नाम दया है।
और भूख में
तनी हुई मुठठी का नाम नक्सलबाड़ी है[11]

भारतीयों की मनोवृत्तियों से घूमित भली–भांति परिचित है–उसे पता है कि नित्य अन्याय, पक्षपात एवं भूख का सामना करना पड़ेगा। इसलिए चुनावों से पूर्व नेताओं द्वारा दिये आश्वासनों के बल पर जीने का प्रयत्न कर लेता है, पर स्थिति में कोई विशेष परिवर्तन नहीं होता, नेता देशवासियों के उत्थान विकास की अपेक्षा स्वयं का हित मुख्य मानते प्रतीत होते हैं। उन्हें केवल आश्वासन देने आते हैं, लोगों को इसी आश्रम पर जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा दी जाती है।

"अब कोई बच्चा भूखा रहकर स्कूत नहीं जायेगा अब कोई छत बारिश में
नहीं टपकेगी.
अपना नंगा चेहरा नहीं पहनेगा अब कोई दवा के अभाव में
अब कोई आदमी कपड़ों की लाचारी में

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

घुट–घुटकर नहीं मरेगा
अब किसी की रोटी नहीं छीनेगा
कोई किसी को नंगा नहीं करेगा
अब यह जमीन अपनी है
आसमान अपना है। जैसे पहले हुआ करता था।[12]

कवि के व्यंग्य–बोध की विशेषता इस बात में है कि उसमें तीखापन तो है पर बौखलाहट कम है। पटकथा में कवि ने मीठे व्यंग्य प्रहार किये है। लोकनायक को सम्बोधित करते हुआ कहते हैं कि लोग उन्हें कई बार नेता चुनते रहे, तॉकि

"समझता रहा में
खुद को समझता रहा– जो मैं जरूर हूँ
वही होगा हमेशा
आज नहीं तो कल मगर सब कुछ सही होगा।"[13]

धूमिल की कविता मात्र स्थिति उद्घाटित नहीं करती वरन् कहीं कहीं प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष स्वरूप से खीझ एवं व्यंग्य करती है।

मूल रूप में जो कुछ वह संसद से सड़क तक की कविताओं में कह जा चुका था, उसका व्यवहार पक्ष 'कल सुनना मुझे' कविताओं में व्यक्त है। चुनाव की वास्तविकता से भली–भाँति परिचित है तभी व्यंग्यगात्मक प्रहार करता है। इतना ही नहीं उसे तो प्रत्येक दिशा में यही दिखलायी देता है। कवि के मन का आक्रोश और झुंझलाहट कविता में व्यंग्य बनकर उभर आयी है।

समस्याओं का समाधान जुटाने की बजाय जनता का ध्यान दूसरी ओर खींचने तथा झूठे वादे देकर जनता को गुमराह करने वाले नेता वर्ग पर कवि का यह आक्रोश बिल्कुल बाजिब है

उसी लोकनायक को
बार–बार चुनता रहा
जिसके पास हर शंका और हर सवाल का एक ही जवाब था
यानी की कोट के बटन–होल में
महकता हुआ एक फूल
गुलाब का द्य
वह हमें विश्वशांति और पंचशील के सूत्र
समझाता रहा।

देश की जनता जिसे देश का सूत्रधार मानकर चुनती है। वह कुर्सी पर बैठते ही। केवल अपना हित ही साधता है। या तो वह किसी की खुशामद करता है या कोई उसके तलवे चाटता है, लेकिन जनता को तो बलहाली से निजाद नहीं मिलती।

"मूढ़ता की हरी–हरी घास तहरा रही है
जिसे कुछ जंगली पशु खूँद रहे हैं तीद कर रहे हैं चर रहे हैं।"[14]

देश के कर्णधार को जनता केवल चुनाव के पहले ही दिखती है। चुनाव के बाद जनता नजर नहीं आती

मैंने राष्ट्र के कर्णधारों को सड़कों पर किमितयों की खोज में भटकते हुए देखा है।[15]

देश–प्रेम : मेरे लिए कविता के आरम्भ में एक बीमार आदमी का सम्बोधन में कवि कहते है जब इससे देश में आपाद्यापी स्वार्थान्यता एवं देश–प्रेम के नाम पर देशद्रोह की स्थिति आ जाती है, इसीलिए उसे लगता है कि देश–प्रेम अपनी सुरक्षा का सर्वोत्तम साधन है।

हर चीज साफ है।
सी खून भी माफ है।
नेकर के नीचे का सारा नंगापन
कालर के ऊपर उठ आया है
चेहरे बड़े घिनौने लगते,
पर इससे क्या फर्क पड़ गया। अगर बड़ी छापाओ वाले बोने लगते[16]

'किस्सा जनतंत्र' में कवि का व्यंग्य दूसरे धरातल का है। एकाएक वह सम्पूर्ण देश की स्थिति पर व्यंग्य करते हुवे

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

कहते हैं कि

"एक रटी हुई रोजमर्रा धुन दुहराने लगती है
वक्त पढ़ी से निकलकर
अंगुली पर आ जाता है और जूता पैरों में, एक दैव टूटी कधी"[17]

उद्धरण की पंक्ति में सदस्य पूरा देश है जो स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भी आस एवं विवादों से घिरा है। "बहुत बड़े तथ्य को वह पाठकों के सम्मुख रखना चाहते है पूरी पीढ़ी मानो आज गुमराह हो रही है। इसीलिए वह परिवेश पर व्यंग्य करते हुए कहते हैं कि

कल सुनना मुझे
जब दूध के पौधे झर रहे हो सफेद फूल
निःशब्द पीते हुए बच्चे की जुबान पर
और रोटी खापी जा रही हो चौके में
गोश्त के साथ"[18]

धूमिल 'मृत्यु– चिन्ता' कविता में बच्चों की आँखों में अभिशाप की छाया तथा बूढ़ों के चेहरों पर पाप की परछाई से व्यंग्य करते है। एक पीढ़ी में पाप है तथा दूसरी में उसका अभिशाप निहित है। 'प्रवेश–पत्र' में धूमिल भूख की समस्या का समाधान न हो सकने के आधार पर व्यंग्य करता है।

नलकूपों नालियों झरना गयी
उनमें लठियों बहती है और पानी
आदमी का खून रिसता है।"[19]

समकालीन बोधों में व्यंग्य बोध का विशेष महत्व है। समाज में व्याप्त सामाजिक, राजनितिक, आर्थिक या धार्मिक विसंगतियों से समाज को मुक्त करना अंसभव है, किन्तु इन्हें कुछ हद तक कमजोर अथवा कम किया जा सकता है वह भी व्यंग्य के प्रहार द्वारा व्यंग्यकार विचारों का मंथन कर समाज की विषमताओं को व्यंग्य रचना द्वारा समाज के सम्मुख रखता है। अतः धूमिल की रचनाओं में व्यक्त व्यंग्य निश्चित ही नयी चेतना एवं प्रगति का द्योतक है। धूमिल का व्यंग्य अत्यन्त तीखा है– पर सीधी मार करता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. सिंह, सत्यव्रत, काव्य प्रकाश, पृष्ठ क्रमांक–13.
2. ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्री, खण्ड 9, पृष्ठ क्रमांक–119.
3. पटकथा, धूमिल कविता कोश, http://kavithakosh.org
4. मोचीराम धूमिल कविता कोश, http://kavithakosh.org
5. मोचीराम, धूमिल कविता कोश, http://kavithakosh.org
6. मोचीराम, धूमिल कविता कोश, http://kavithakosh.org
7. मोचीराम, धूमिल कविता कोश, http://kavithakosh.org
8. 'पटकथा', धूमिल कविता कोश, http://kavithakosh.org
10. शहर में सूर्यास्त धूमिल कविता कोश, http://kavithakosh.org
11. 'नक्सलवाड़ी' तथा 'पटकथा' धूमिल कविता कोश, http://kavithakosh.org
12. पटकथा, धूमिल कविता कोश, http://kavithakosh.org
13. 'कल सुनना मुझे धूमिल कविता कोश, http://kavithakosh.org
14. कुछ सूचनाएँ, धूमिल कविता कोश, http://kavithakosh.org
15. देश–प्रेम मेरे, धूमिल कविता कोश, http://kavithakosh.org
16. आज में लड़ रहा हूँ, धूमिल कविता कोश, http://kavithakosh.org
17. मृत्यु– चिन्ता', धूमिल कविता कोश, http://kavithakosh.org
18. 'कल सुनना मुझे, धूमिल कविता कोश, http://kavithakosh.org
19. 'प्रवेश पत्र' धूमिल कविता कोश, http://kavithakosh.org

*****